ॐ

जीवन का भारतीय प्रतिमान

प्रस्तुति – अवनीश भटनागर

प्रतिमान अर्थात् ?

- जीवन दृष्टि – जीव–जगत–जगदीश्वर के प्रति हमारी दृष्टि।
- जीवन शैली – जीवन व्यवहार के सूत्र।
- जीवन पद्धति– राष्ट्र की प्रकृति, चिति तथा दर्शन के अनुरूप।

भारतीय और अभारतीय प्रतिमानों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं -

(क) पारिवारिक जीवन में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ समाज की लघुतम इकाई – 'परिवार'	○ समाज की लघुतम इकाई – 'व्यक्ति'
○ संयुक्त परिवार व्यवस्था	○ एकल परिवार रचना
○ स्त्री-पुरुष की परस्पर पूरकता	○ नारी स्वातंत्र्य एवं सशक्तिकरण
○ ज्ञानवृद्धि या परमात्मा की खोज हेतु देशाटन	○ सैर-सपाटा, तफरीह, आनन्द के लिए घूमना

(ख) सामाजिक जीवन में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ समाज के प्रति संवेदना, दायित्व भाव ○ सबल समाज वही जिसमें सबको समान अवसर। सर्वे भवन्तु सुखिनः। ○ धर्मसत्ता – ज्ञानसत्ता – राजसत्ता – अर्थसत्ता यह समाज का क्रम ○ सामाजिक सम्बन्धों का आधार आत्मीयता, संवेदनशीलता तथा अन्योन्याश्रितता। एकत्वभाव।	○ स्वार्थपरक, भौतिकवादी दृष्टिकोण ○ सबल को जीने का अधिकार (Survival of the fittest) और निर्बल के शोषण का अधिकार। ○ अर्थसत्ता सर्वोपरि, राजसत्ता उसके अनुरूप, ज्ञानसत्ता उसके अधीन और धर्मसत्ता अस्तित्वहीन ○ सभी सामाजिक सम्बन्ध मात्र अनुबन्ध एवं स्वार्थ पूर्ति के लिए। द्वैत भाव।

(ख) सामाजिक जीवन में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ भाषा–भूषा–भोजन–रंग–लिंग–जाति–पंथ–पूजा पद्धति–प्रान्त आदि की विविधता में भी एकात्मभाव ○ लोकतंत्र का अर्थ – सर्वसम्मति तथा सबको समान अधिकार–दायित्व ○ स्वतंत्र–सक्षम–आत्मनिर्भर समाज ○ मेरे ज्ञान से सम्पूर्ण समाज का हित साधन हो, यह उदारता	○ 'मैं' सर्वश्रेष्ठ का भाव। मेरे विचार से सहमत होना आवश्यक। ○ लोकतंत्र का आधार बहुमत ○ प्रत्येक कार्य 'नौकर' के भाव से ○ एकाधिकार (Patent) और बौद्धिक सम्पदा अधिकार (Intellectual Property Rights)

(ख) सामाजिक जीवन में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ जो जन्मा है सो खायेगा और जो कमायेगा वह खिलाएगा	○ अर्थार्जन अनिवार्य – जो कमायेगा सो खाएगा
○ गाँव सक्षम – आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के केन्द्र	○ अबाध शहरीकरण, औद्योगिकीकरण
○ अतिरिक्त आय या बचत का प्रयोग समाजोपयोगी कार्यों में	○ अधिकतम कमाओ, मौज–मस्ती में खर्च करो
○ शक्ति, उत्पादन, अर्थ, सत्ता आदि में समाज का समभाग।	○ शक्ति, उत्पादन, अर्थ, सत्ता का केन्द्रीयकरण

(ग) जीवन व्यवहार

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ पुरुषार्थ चतुष्टय जीवन का लक्ष्य – धर्म, अर्थ, काम–मोक्ष	○ जीवन का लक्ष्य – व्यक्तिगत सुख–सुविधा–आराम– अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति। (Eat, Drink & Be merry)
○ भोजन, शिक्षा, औषधि अमूल्य	○ सब कुछ बाजार का अंग
○ मातृवत् परदारेषु। स्त्री देवी स्वरूपा	○ नारी भोग्या। पुरुष के बाद, पुरुष के लिए, पुरुष से स्त्री का निर्माण।
○ परद्रव्येषु लोष्ठवत्	○ जहाँ से और जैसे मिले, कमाओ

(ग) जीवन व्यवहार

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ प्रकृति का संरक्षण ○ धारणाक्षम विकास की संकल्पना ○ न्यायप्रणाली का आधार सत्य की प्रतिष्ठापना – सत्यमेव जयते ○ वचनपालन महत्वपूर्ण	○ प्रकृति का अधिकतम उपभोग, दोहन, शोषण और नष्ट करने का अधिकार ○ वर्तमान आवश्यकतापूर्ति करो, भविष्य की चिन्ता नहीं ○ गवाहों और साक्ष्यों के आधार पर असत्य को भी सत्य सिद्ध कर विजय प्राप्त कर सकते हैं। ○ परस्पर अविश्वास के कारण प्रत्येक बात का अभिलेख

(ग) जीवन व्यवहार

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व तथा श्रेष्ठ गुणों का विकास	○ शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन मात्र
○ आत्म साक्षात्कार द्वारा आत्मविकास	○ प्रगति का आधार प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या।

(घ) धार्मिक – आध्यात्मिक दृष्टि में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ सृष्टि के कण–कण में ईश्वर की उपस्थिति। सर्वव्याप्त, सर्वज्ञ परम चैतन्य सत्ता। सर्वभूताशयस्थितः (गीता 10 / 20)	○ ईश्वर कहीं सातवें आसमान पर। सर्व व्याप्त नहीं, सर्वशक्तिमान।
○ तेन–त्यक्तेन भुंजीथा	○ अधिकतम संग्रह और उपभोग

(घ) धार्मिक – आध्यात्मिक दृष्टि में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ प्रकृति दिव्यगुणयुक्त। प्रकृति प्रदत्त वस्तुएँ– वायु,जल, सूर्य का प्रकाश आदि अमूल्य	○ निःशुल्क वस्तु मूल्यहीन अतः उसका दुरुपयोग या नष्ट करना उचित। प्रकृति मेरी भोग्या, दासी।
○ ईश्वर साक्षात्कार तथा मोक्ष प्राप्ति अपने कर्मों से। (Liberation is gained / attained)	○ भगवान की प्राप्ति अचिन्त्य, अपराध। Salvation is granted

(घ) धार्मिक – आध्यात्मिक दृष्टि में

भारतीय प्रतिमान	अभारतीय प्रतिमान
○ धर्मग्रन्थ ईश्वर की वाणी। वैदिक ऋचाओं का दर्शन–अनुभूति। ○ एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति ○ स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः – व्यवहार से प्रेरणा दे कर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।	○ ईश्वर के दूतों के उपदेश। ○ केवल मेरा विचार ही सत्य। सबको उसके अनुसार चलना होगा। ○ Whiteman's burden अर्थात् अन्य धर्मावलम्बियों को अपना अनुयायी बनाना कर्त्तव्य।

भारतीय प्रतिमानों के अनुरूप समाज व्यवस्थाओं की पुनर्स्थापना कैसे हो?

- प्रकृति में परिवर्तन की स्थायी। सृष्टि प्रतिक्षण स्वरूप बदलती है।
- परिवर्तन दो प्रकार के– (1) नैसर्गिक तथा (2) मनुष्य निर्मित।
- समाज की सुव्यवस्था के लिए आवश्यक – (1) नैसर्गिक परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को ढालना तथा (2) मानव सृजित परिवर्तनों को प्रकृति की रचना के अनुकूल रखना।

- ‘धर्म’ की स्पष्ट, सकारात्मक, वास्तविक संकल्पना – पहली, चराचर जगत के लिए – **धारयति इति धर्मः**, तथा दूसरी, समाज के लिए उपयोगी – **यतो अभ्युदयः निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।**
- नैसर्गि अर्थात परमात्मा – प्रेरित परिवर्तन सदैव धर्मानुकूल।
- मनुष्य रचित परिवर्तन तीन प्रकार के – (1) धर्मानुकूल (2) धर्म प्रतिकूल एवं (3) न धर्म अनुकूल न धर्म विपरीत।

धर्मानुकूल व्यवस्थाओं /प्रतिमानों की स्थापना के लिए करणीय क्या?

1. धर्मानुकूल तथा धर्मविपरीत की समुचित अवधारणा के लिए धर्म के वास्तविक अर्थ व स्वरूप का ज्ञान।
2. ऐसे परिवर्तनों के लिए प्रतिबद्ध समाज की युवा पीढ़ी का निर्माण।
3. युगानुकूल तथा स्वदेशानुकूल सामाजिक आचरण संहिता (स्मृतियों) की प्रस्तुति।
4. इन स्मृतियों की सामाजिक स्वीकृति के लिए समाज के नेतृत्वकर्ताओं द्वारा वातावरण निर्माण।

5. ज्ञाता – त्राता – आचरणकर्ता नेतृत्व का विकास।
6. इतिहास से शिक्षा।
7. समाज की उदासीनता तथा विरोध का धैर्यपूर्वक सामना करते हुए लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध, विचारवान पीढ़ी का निर्माण।
8. ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज अर्थात् ज्ञान और शक्ति का समन्वय।

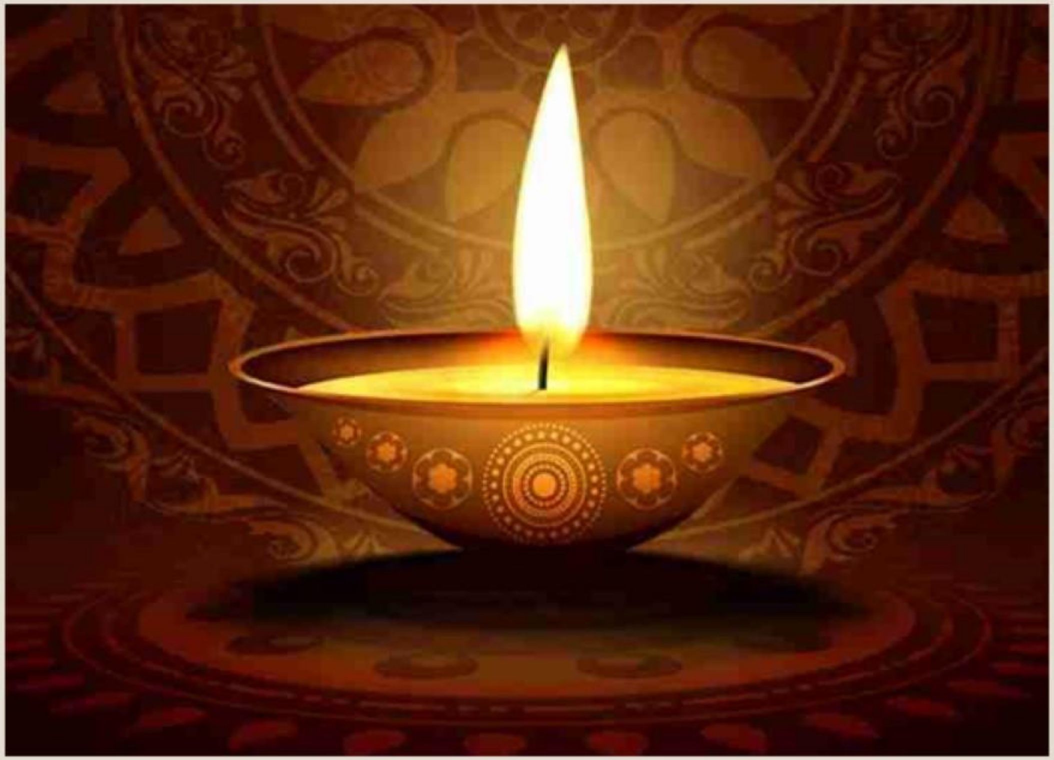

।। आत्मदीपो भव ।।